ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गायत्री शक्तिपीठें—अन्य देवालयों की तरह ही दिखाई पडेंगी, पर उनकी मौलिक विशेषता यह होगी वे अपने समीपवर्ती वातावरण में युग चेतना उत्पन्न करने के लिए प्राणवान प्रयास करेंगी। दर्शक देवता को नमन करने पधारें यह उचित है, पर इससे भी अधिक आवश्यकता यह है कि देव संस्थान अपने समीपवर्ती क्षेत्र में धर्म धारणा को प्रतिष्ठित एवं परिपक्व करने के लिए भी प्रबल प्रयत्न करें। गायत्री शक्तिपीठों का निर्माण जन—मानस में धर्म धारणा के प्रति अगाध आस्था उत्पन्न करने और तदनुरूप आचरण में शालीनता तथा उदारता का समावेश करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। युग परिवर्तन के लिए व्यक्ति का दृष्टिकोण और चरित्र बदलना चाहिए, गायत्री शक्तिपीठें अपने क्षेत्र में इसी का सुनियोजित प्रयत्न करेंगी। उन्हें युग तीर्थ की संज्ञा देने में कोई अत्युक्ति नहीं है।

प0 श्रीराम शर्मा आचार्य

सूत्र संचालक का संक्षिप्त परिचय

परम पूज्य गुरूदेव वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य का अवतरण मनुष्य शरीर के रूप में आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रम संवत् 1968 (20 सितम्बर,1911) को ग्राम आंवलखेडा, जिला आगरा में उनके पिताश्री पं0 रूप किशोर शर्मा एवं माता पू0 दान कुँवंरी के घर पर हुआ।

गुरूदेव ने आदिशक्ति महाप्रज्ञा को धरती पर अवतरित करने के लिए भागीरथ की तरह प्रचण्ड तप बसन्त पंचमी (18 जनवरी, 1926) को 15 वर्ष की आयु में हिमालय की ऋषिसत्ता के निर्देशन में प्रारम्भ किया। महाशक्ति के अवतरण का वेग शिव की तरह अपने मस्तिष्क पर साधना की शक्ति से धारण किया तथा उसे जन सुलभ, जन उद्धारक धारा के रूप में प्रवाहित किया । अपनी तप साधना का उपयोग उन्होंने गायत्री परिवार–युग निर्माण योजना के प्रचार–प्रसार में किया। वे अपने शिष्यों को शिक्षा देते थे– बोओ और काटो। अर्थात् श्रेष्ठ कर्मो की खेती करो। वे सबको बताया करते थे कि किसी ढोंगी–पाखण्डी के चक्कर में मत पडो। अंध विश्वास से दूर रहो। अपनी शक्तियों को जागृत करो। श्रेष्ठ कार्य करके महामानव व देव मानव बनो। उन्होंने गायत्री परिवार के सदस्यों से आत्मोन्नति के लिए कुछ संकल्प लेने को कहा। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है इस विश्वास के आधर पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ठ बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे तो युग अवश्य बदलेगा।

परम पूज्य गुरूदेव ने गायत्री परिवार के सदस्यों को प्रेरित किया वे परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्व देंगे। जो लोग गायत्री परिवार से जुडना चाहते हैं उन्हें अपने गुण, कर्म व स्वभाव को उत्कृष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। गुरूदेव का जीवन खुली पुस्तक की तरह

है। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना ही सच्ची गुरू भक्ति होगी और यही गुरू के प्रति सच्ची गुरू दक्षिणा होगी।

परम पूज्य गुरूदेव की ही तरह परम वंदनीया माताजी भाव संवेदना की पुंज थी। मातृत्व के माध्यम से स्नेहसिक्त अंतःकरण की जो झलक झॉकी हमें हमारी शक्ति स्वरूपा माता भगवती देवी से मिली, वही हमारी आज की शक्ति का स्त्रोत बनी हुई है। मॉ शारदा–ठाकुर रामकृष्ण देव की तरह वे भी हमारे आराध्य गुरूसत्ता के साथ हमारे बीच आई। वे अपनत्व लुटाने आई व संगठन को शक्ति देने आई। परमपूज्य गुरूदेव के निर्देश पर उन्होंने संगठन की बागडोर भी संभाली व ऋषि सत्ताओं के सूक्ष्म मार्गदर्शन में अपनी जिम्मेदारी निभाई। 1943 से गुरूदेव के साथ प्रारम्भ उनकी यह यात्रा 19 सितम्बर, 1994 में उनके महाप्रयाण तक समर्पण के एक अभूतपूर्व इतिहास की रचना कर गई।

पूज्य गुरूदेव कहते रहे कि मुझमें और माताजी में कोई भेद नहीं है। पूज्यवर के महाप्रयाण के बाद सामान्य गृहणी के बाने में अपने को छिपाये बैठी भगवती अपने विराट वैभव के साथ अनायास ही प्रकट हो गयीं। सभी को अनायास ही उनकी दिव्यता का आभास ऐसी प्रखरता के साथ हुआ कि कहीं अविश्वास या आश्चर्य की कोई गुजायश नहीं रही। उन्होने देव संस्कृति को धर घर

पहुँचाने के लिए संस्कार महोत्सवों की योजना दी। अपने अपने क्षेत्रों की जिम्मेदारी उठाने की शपथ लेने के लिए समारोह में बुलाया। आश्वमेधिक लहर अचानक न जाने कहाँ से अवतरित हो गयी। मां ने कहा–संकल्प लो और छोटे छोटे उत्तरदायित्वों को भी न सम्भाल सकने वाले रीछ–वानरों में असम्भव दिखने वाले अश्वमेधों की जिम्मेदारियाँ स्वीकार करने की होड मच गयी। देव संस्कृति का शंखनाद हुआ । आलोचक एवं प्रशंसक सभी हतप्रभ रह गये। हर कार्यक्रम अपने आप में अनूठा रहा। इतनी दिव्यता–इतनी भव्यता कहा से आयी ? इस प्रश्न का उत्तर सभी ओर से एक ही मिलता रहा है ''हमें नहीं पता, किस दिव्य चेतना प्रवाह ने यह कार्य करवा लिया '' परम पूज्य गुरूदेव एवं वंदनीया माता जी की दिव्यता के नये नये आयाम लोगों के सामने आते चले गये।

माताजी के बाद इस जिम्मेदारी का निर्वहन आदरणीया शैल दीदी कर रही हैं। शान्तिकुंज आने वाले परिजन शैल दीदी में माताजी और गुरूदेव की प्रतिछाया ही पाते है। आध्यात्मिक साधना शिविरों में सफल संचालन आपके संरक्षण में शान्तिकुंज हरिद्वार में चल रहे है। मिशन की गतिविधियों को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान देने में जुटे ब्रह्मवर्चस्व शोध संस्थान के निदेशक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ0 प्रणव पण्ड्या ने आंवलखेडा और हरिद्वार में अश्वमेघ महायज्ञ आयोजन की महापूर्णाहूति कार्यक्रम का सफल संचालन किया। इन

आयोजनों मे देश–विदेश से आये एक करोड से भी अधिक लोगों की उपस्थिति रही। डॉ0 प्रणव पण्ड्या जी ने इन आयोजनों के बाद मिशन को एक नया स्वरूप प्रदान किया हैं विदेशों में भारतीय अध्यात्म की विज्ञान सम्मत प्रस्तुत से न केवल अप्रवासी भारतीय अपितु विदेशी भी प्रभावित हुए। आज मिशन की शाखाएँ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हैं जिनके माध्यम से लाखों कार्यकर्ता देव संस्कृति के प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना और उसमें विद्यार्थियों का अध्ययन गायत्री परिवार के लिए ही नहीं भारत देश के लिए आज गौरव की बात है। यहॉ पढाये जाने वाले विषयों की आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बौद्धिक जगत में चर्चा हो रही है।

गुलाबी नगरी जयपुर में गायत्री परिवार के बढते कदमः–

गायत्री परिवार द्वारा देश भर में चार हजार गायत्री शक्तिपीठ स्थापित की गई है जिनमें से 175 शक्तिपीठें राजस्थान में है। इनमें से जयपुर की गायत्री शक्तिपीठ प्रान्तीय राजधानी में होने के कारण अपना विशिष्ठ स्थान रखती हैं। जयपुर में प्रारम्भ में जौहरी बाजार में परतानियों के रास्ते में श्री जुगलबिहारी जी के मन्दिर में गायत्री परिवार की गतिविधियॉ प्रारम्भ हुई। उस समय के कार्यकर्ताओं के जोश व लगन से फरवरी 1962 में 51 कुण्डीय यज्ञ यहॉ सम्पन्न हुआ। 1971 में 108 कुण्डीय

गायत्री महायज्ञ भी जयपुर में सम्पन्न हुआ, जिसमें जयपुर की एक लाख जनता ने भागीदारी की तथा स्वयं परमपूज्य गुरूदेव पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी पधारे थे।

परम पूज्य गुरूदेव दिसम्बर 1980 में गायत्री शक्तिपीठों एवं प्रज्ञा पीठों की प्राण प्रतिष्ठा के लिए कांवट, वाटिका, काछोला एवं पुष्कर आये तब जयपुर के कार्यकर्ताओं को जयपुर में भी शक्तिपीठ बनाने के लिए पुष्कर में ही संकल्प दिलाया था। इसके पश्चात् जयपुर के गायत्री परिजनों ने शहर के गढ़गणेश और जयपुर के प्रसिद्ध आराध्य श्री गोविन्द देव जी के मन्दिर के मध्य पौण्डरिक उद्यान में राज्य सरकार से 3000 वर्ग गज का भूखण्ड प्राप्त कर जन जन के मन में धर्म धारणा जगाने, समझदारी, इमानदारी, जिम्मेदारी का वातावरण बनाने के उद्देश्य से दिनांक 19.1.1973 को भूमि पूजन के साथ गायत्री शक्तिपीठ की स्थापना की गई जो आज जयपुर के लाखों श्रद्धालुओं के आस्था केन्द्र के रूप में विकसित हो चुकी है।

जयपुर के रामलीला मैदान में 15 से 17 मई 1987 को 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ। वर्ष 1990 में परम पूज्य गुरूदेव ने यज्ञ की सार्वभौम एक नई विधा दीपयज्ञों की प्रारम्भ की। जिसका प्रथम 24 लक्ष दीप महायज्ञ जयपुर के जय निवास उद्यान में सम्पन्न हुआ जिसमें तत्कालीन

महामहिम राज्यपाल पधारे थे। उसके पश्चात् परमपूज्य गुरूदेव ने स्थूल शरीर छोडने से पूर्व समस्त भारत के भू–भाग को छः भागों में विभाजित कर छः केन्द्रों पर ब्रह्म दीपयज्ञ की घोषणा कर दी थी। उनमें से एक केन्द्र जयपुर भी था। उनके 2 जून, 1990 को स्थूल शरीर छोडने के पश्चात् इस ब्रह्म दीपयज्ञ का आयोजन 7 से 8 जून, 1990 को चौगान स्टेडियम जयपुर में सम्पन्न हुआ। ब्रह्म दीपयज्ञ की अनेक दिव्य अनुभूतियॉ अनेक परिजनों को स्मृति होने पर उन्हें आज भी भाव विभोर कर देती हैं।

स्वर्णिम इतिहास की शुरूआत.....

ब्रह्म दीपयज्ञ के पश्चात् अक्टूबर, 1992 में राष्ट्र को सशक्त एवं समर्थ बनाने के उद्देश्य से शान्तिकुॅज में अश्वमेघ यज्ञों की योजना बनाई गई। देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के शुभारम्भ का प्रथम शंखनाद था– जयपुर अवमेध यज्ञ। इस योजना का प्रथम अश्वमेघ यज्ञ दिनांक 7 से 10 नवम्बर, 1992 को जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा स्वयं पधारी एवं देव संस्कृति दिग्विजय अभियान का शंखनाद किया। इसी अवसर पर उन्होनें आद्यशक्ति मॉ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा इस शक्तिपीठ के भव्य मन्दिर में की। माता भगवदी देवी द्वारा आद्यशक्ति गायत्री मां की यह प्रथम प्राण–प्रतिष्ठा में

आदरणीय डॉ0 प्रणव पण्ड्या ने शान्तिकुंज के अन्य विद्वान पण्डितों के साथ भाग लिया। इस योजना में महामहिम उपराष्ट्रपति तथा तत्कालीन मुख्यमन्त्री राजस्थान श्री भैरोसिंह शेखावत ने पूरे मनायोग से अपनी मन्त्री परिषद के सदस्यों के साथ भाग लिया था।

इसकी भव्यता दिव्यता एवं प्रभाव ने भारत के इतिहास के पन्नों पर अपनी स्वर्णिम छाप हमेशा के लिए छोडी । इस आयोजन में देश विदेश के लोगों ने भाग लिया। इसके पश्चात् जयपुर में गायत्री परिवार का बडी तीव्र गति से विस्तार हुआ।

अश्वमेध यज्ञ के प्रयाज कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेक स्थानों पर पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं 1997 में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ जयपुर के रामलीला मैदान में सम्पन्न हुआ। जयपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में साइकिल यात्राओं के माध्यम से जन जागरण का कार्य 14.9.1997 से प्रारम्भ किया गया जो वर्ष 1999 तक प्रखर साधना वर्ष के कार्यक्रमों तक चलता रहा। वर्ष 2000 को महापूर्णाहूति वर्ष घोषित किया गया जिसके अन्तर्गत गॉव गॉव से लेकर जिला स्तर तक की पूर्णाहूति के पश्चात् दिनांक 25–26.5.2000 तक अजमेर, दौसा, टोंक, भरतपुर, करौली एवं जयपुर जिले का सम्भागीय पूर्णाहूति का कार्यक्रम पौण्डरिक उद्यान में सम्पन्न हुआ। वर्ष 2000 में महिला जागरण अभियान के अन्तर्गत 24 कुण्डीय यज्ञ के साथ

नारी जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें मंच संचालन से लेकर यज्ञ सुरक्षा तक के सभी कार्य महिलाओं ने ही सम्भाल कर समाज में नारी शक्ति को एक नई पहचान दी है।

सुव्यवस्थित नियोजन

वर्ष 2002 को शान्तिकुंज द्वारा पुनर्गठन वर्ष घोषित किया गया जिसमें देशभर में गायत्री शक्तिपीठों के लिए एक सुनिश्चित नीति निर्धारित की गई। इस क्रम में गायत्री शक्तिपीठ जयपुर में भी परिजनों की एक गोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें ट्रस्टियों एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं की चार कार्य समितियों का गठन हुआ जिसका शान्तिकुंज हरिद्वार से अनुमोदन हुआ। जिसके परिणाम स्वरूप इस शक्तिपीठ का सुचारू संचालन एवं क्रिया कलापों का विस्तार हुआ।

28 से 31 अक्टूबर 2003 तक गायत्री शक्तिपीठ के सामने पौण्डरिक उद्यान में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ चेतना विस्तार एवं प्रज्ञा पुराण कथा का सफल आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सभी वर्गो के नये लोग सम्मिलित हुए सहयोग दिया और अब वे समयदान, अंशदान के संकल्प लेकर सक्रिय कार्यकर्ता बन गये।

इसके पश्चात् स्थानीय गायत्री परिवार ट्रस्ट का अवसान कर उसका विलीनीकरण/अवसान एवं सर्मपण श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुँज, हरिद्वार में किया गया। वेदमाता गायत्री ट्रस्ट ने न केवल स्थानीय गायत्री परिवार ट्रस्ट , जयपुर के प्रस्ताव को स्वीकार किया बल्कि जयपुर, सीकर, टोंक एवं दौसा जिलों के लिए अपना उपजोन केन्द्र का भी यहॉ शुभारम्भ किया। दिनांक 12 से 15 नवम्बर 05 को पौण्डरिक उद्यान में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं विराट संकल्प दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ 15 नवम्बर को नव निर्मित प्रखर प्रज्ञा–सजल श्रद्धा का लोकार्पण श्रद्धेय डा0प्रणव पण्ड्या जी द्वारा किया गया। वर्तमान में यह उपजोन केन्द्र जोन कार्यालय पुष्कर के अन्तर्गत कार्य कर रहा है। संगठनात्मक दृष्टि से गायत्री शक्तिपीठ, जयपुर में उपजोन कार्यालय के अतिरिक्त जयपुर जिला, ग्रामीण एवं जयपुर जिला, शहर, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, व्यसनमुक्ति आन्दोलन एवं युवा प्रकोष्ठ, उपजोन के कार्यालय चल रहे हैं जिनमें माध्यम से तीन अन्य जिलों सहित जयपुर जिले की 13 पंचायत समितियों में नव चेतना विस्तार केन्द्र (तहसील स्तरीय कार्यालय) गायत्री शक्तिपीठ, वाटिका तथा प्रज्ञापीठ, चौमू , जयपुर शहर के 24 नव चेतना विस्तार केन्द्रों, प्रज्ञा मण्डलों, महिला मण्डलों एवं युवा मण्डलों एवं हजारों देव परिवार के सदस्यों के माध्यम से जन–जन की पीडा एवं पतन निवारण करने का प्रयास किया जा रहा है।

सम्पर्क सूत्र :–

1 व्यवस्थापक, उपजोन कार्यालय, जयपुर
दूरभाष 3237744, 9413341010
2 व्यवस्थापक, गायत्री शक्तिपीठ, जयपुर दूरभाष 2411000
3 जिला शहर कार्यालय : 9414456881
4 जिला ग्रामीण कार्यालय :
5 संयोजक, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा
6 संयोजक, संस्कृति मण्डल
7 संयोजक, युवा प्रकोष्ठ, स्वावलम्बन प्रकोष्ठ एवं ग्राम प्रबन्धन प्रकोष्ठ
8 समन्वयक : साधना आन्दोलन, व्यसन मुक्ति अभियान एव पर्यावरण प्रकोष्ठ।

हमारा उद्घोष

हम बदलेंगे युग बदलेगा, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा

हमारी मान्यताएँ

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। जो जैसा सोचता है और करता है, वैसा ही बन जाता है।

आत्म निर्माण के दो सूत्र

उत्कृष्ट चिन्तन

आदर्श कृतत्व

जीवन निर्माण के चार स्तम्भ

साधना

स्वाध्याय

संयम

सेवा

आध्यात्मिक जीवन के तीन आधार

उपासना

साधना

आराधना